

Otto Böhtlingk & Rudolph Roth: Sanskrit-Wörterbuch, Part 1, Petersburg 1855

16, 1. 5. स्त्रीषी वज्री वृषभस्तुर्याद् 5, 40, 4 und sonst; von den Marut: ग्रमयो न प्रमुच्यन्ता स्त्रीषिणः 2, 34, 1. 1, 64, 12. 87, 1.

2. स्त्रीषिन् (von 2. स्त्रीष) adj. aus Trestern bestehend: तेनाश्रुमग्यद-भियुषोति तेनोषि TS. 3, 2, 2, 1.

स्त्री (von 4. घर्ज्ञ) 1) adj. Uṇ. 1, 27. in gerader Richtung laufend, gerade; richtig, recht, rechtlich, aufrichtig (im Veda ist es so v. a. साधु und der Gegens. ist वृजिन; in der klass. Sprache ist der Gegens. निष्ठा und तिर्यच्) AK. 3, 2, 21. H. 373. 1436. स्त्रीना पृथा RV. 1, 41, 5. 10, 83, 23. स्त्री च गातु वृजिनं च 9, 97, 18. स्त्रवे क्रमेणाप 6, 70, 3. स्त्रु मतेषु वृजिना च पश्यन् 4, 1, 17. उरुशंसो स्त्रवे मर्त्योय 2, 27, 9. स्तं शंसत स्त्रु दोध्यानाः 10, 67, 2. 9, 97, 13. VS. 37, 10. TS. 2, 3, 11, 7. यानीमानि वयसः प्रत्यञ्चि शीर्षं या पुच्छादन्नि लोमानि CAT. Br. 10, 2, 1, 9. 14, 1, 2, 22. पयसुना M. 3, 93. ० मार्ग (übertr.) MBh. 3, 10883. दण्ड M. 2, 47. स्तम्भ R. 5, 13, 13. Suṣr. 1, 43, 11. 93, 19. 96, 17. H. 179. ० ग्रवण Ck. 8, Sch. स्त्रुणैव चतुषा KUMĀRAS. 3, 32. ० बुद्धि R. 4, 34, 31. ० बुद्धिता 3, 23, 30. ० मति DhṛtAS. 88, 2. von Personen JĀGĒ. 2, 68. R. 2, 21, 6. 5, 32, 9. PAṆĀT. I, 466. KATHĀS. 24, 79. — adv.: विद्वान्पथः पुरात स्त्रु नैषति RV. 5, 46, 1. स्त्रु पन्ततः 2, 3, 7. स्त्रु विध्यत् Suṣr. 1, 54, 17. स्त्रुवासीन 2, 332, 5. स्त्रुलम्बिन AK. 2, 6, 3, 37. H. 632. स्त्रुवाल्लिखितं CAT. Br. 10, 2, 1, 8. — comp.: स्त्रीयम्, ved. auch रैजीयम् P. 6, 4, 162. तपोऽर्त्तस्य पंत्तद्वीयः RV. 7, 104, 12. इषा स्त्रीयः पततु AV. 5, 14, 12. — superl. स्त्रीष्ठ, ved. auch रैजिष्ठ P. 6, 4, 162. नयन्तस्य पथिभि रजिष्ठैः RV. 1, 79, 3, 91, 1. रजिष्ठया रज्या 10, 100, 12. Vgl. घनृन्. — 2) m. N. pr. ein Sohn Vasudeva's Buṅg. P. 9, 24, 53.

स्त्रुकाय (स् + का) 1) adj. geraden Körpers Buṅg. P. 3, 28, 8. — 2) m. ein Beiname Kaṣṭhapa's GĀṬĀDH. im ÇKDR.

स्त्रुक्रतु (स् + क्र) adj. das Rechte wollend RV. 1, 81, 7.

स्त्रुगं (स् + ग) adj. geradeaus gehend AV. 1, 12, 1. TS. 3, 1, 10, 2.

स्त्रुगाय (von स् + गाया) adj. richtig singend RV. 5, 44, 5.

स्त्रुता (von स्त्रु) f. gerade Richtung, Geradheit: स्त्रुता नयतः स्मरामि ते शरम् KUMĀRAS. 4, 23. gerades, offenes Wesen: स्त्रुता हरे कुरु प्रेयसि AMAR. 67.

स्त्रुदास (स् + दा) m. N. pr. eines Sohnes von Vasudeva VP. 439.

स्त्रुधा (von स्त्रु) adv. gerade, richtig: यज्ञमेव तदनुधा प्रतिष्ठापयति AIT. Br. 1, 28.

स्त्रुनीति (स् + नी) f. richtige Führung RV. 1, 90, 1. Nir. 6, 21.

स्त्रुमितान्तरा (स्त्रु-मित + अन्तर) f. Titel eines Commentars zu JĀGĒNA-VĀLKJA's Gesetzbuch, gew. abgekürzt MITIKSHARĀ genannt, Verz. d. B. H. No. 1013. fgg.

स्त्रुमुक्त्वा (स् + मु) adj. dessen Glied straff ist: वृषणः RV. 4, 2, 2. 6, 9.

स्त्रुरश्मि (स् + र) adj. gerade Stränge habend: रश्मि AV. 4, 29, 7.

स्त्रुराक्षित (स् + रा) n. Indra's gerader rother Bogen H. 179, Sch. Richtiger als zwei gesonderte Worte zu fassen.

स्त्रुर्वैनि (स् + व) adj. gerade zustrebend RV. 5, 41, 13 (s. u. स्त्रुकुस्त).

स्त्रुशंस (स् + शं) adj. das Rechte verlangend; so ist die Tmesis aufzulösen in: स्त्रुरिच्छंसे वनवद्वन्यतो देवयन्निदेवयत्तमभ्यस्तु। सुप्रा-वोरिद्वनवत्पुत्सु इष्टरं पञ्चदशैर्वि भोजति भोजनम् RV. 2, 26, 1.

स्त्रुसर्प (स् + स) m. eine best. Art Schlange Suṣr. 2, 263, 9.

स्त्रुकुस्त (स् + कु) adj. die Hand ausreckend: सिषक्तु माता मृत्वी रसा नः स्मत्सूरिभिर्स्त्रुकुस्तं स्त्रुवनिः RV. 5, 41, 15.

स्त्रुक m. vielleicht N. eines Berges Nir. 9, 26. — Vgl. स्त्रीका 2, c.

स्त्रुकर (स्त्रु + कर, कोरति) gerademachen; berichtigen: अज्ञानाद्य-दुक्तं स्यात्तदनुकृत्य गृह्यताम् Sch. in der Einl. zu RV. PAṆT. bei ROTU, Zur L. u. G. d. W. 60.

स्त्रुकराणा (von स्त्रुकर) n. das Geraderichten Suṣr. 1, 23, 17. 2, 91, 14.

स्त्रुनम् (स्त्रु + नम्) m. N. pr. eines Mannes VĀLKJA. 4, 2.

स्त्रुय (denom. von स्त्रु); davon partic. स्त्रुयन् gerades Weges —, richtig wandelnd, redlich Nir. 12, 39. तनैर्यमाभि रत्तयन्त्युत्तमन् व्रतम् RV. 1, 136, 5. स्त्रुयते वृजिनानि वृत्ततः 5, 12, 5. स्त्रुयते यज्ञमानाय सुव्यते 10, 100, 3. देवानां भद्रा मुमतिस्त्रुयताम् 1, 89, 12. 116, 23. med. sich gerade richtend auf Etwas: सो अचिंयो वृत्रिं व्यानुतेमाम् वृत्रयमानो घतपन्महि-त्वा 10, 88, 9.

स्त्रुयौ (von स्त्रुय) f.; davon ein gleichlautender instr. स्त्रुयौ adv. gerades Weges: दिशे न दिष्टमनुयेव यत्तो RV. 1, 183, 5.

स्त्रुयु (wie eben) adj. redlich: सत्यमेवा स्त्रुययः RV. 1, 20, 4.

1. स्त्रुय (von 3. घर्ज्ञ) adj. röthlich, im Unterschied von घृत्त lichtröthlich wohl die dunklere, braunröthliche Farbe; besonders von Rossen RV. 1, 117, 14. स्युमन्यु स्त्रुया वात्स्याद्या 174, 5. 4, 16, 11. 10, 22, 5. 7, 18, 23. 6, 63, 9. 8, 1, 32. 23, 22. 34, 17. 57, 13. अतस्त्रुयवर्णो 18. दिवा कुरि-र्दृष्टे नक्तमूत्रः 9, 97, 9. 10, 20, 9.

2. स्त्रुय m. Führer Uṇ. 2, 29. — Hängt wohl mit स्त्रु zusammen.

स्त्रुयश्च (1. स्त्रुय + अश्च) m. N. pr. eines Mannes RV. 1, 100, 16. 17. durch die Aṣvin von Blindheit geheilt 116, 16. 117, 17. 18.

स्त्रुय्य (von 1. स्त्रुय) adj. röthlich: प्रज्ञानम्रे तव योनिमूत्रियम् (आसद्:) RV. 10, 91, 4.

स्त्रुय्य (स्त्रु + अश्च) adj. geradeaus gehend, von den Rossen Agni's RV. 4, 6, 9.

स्त्रुयसान् m. ved. Wolke Uṇ. 2, 84. — Ist partic., vgl. 4. घर्ज्ञ 3.

स्त्रुयौ 1) adj. schuldig: सद्यो यः स्युन्नेा विषितो धवीयानृणो न तायुरति धन्वा राट् RV. 6, 12, 5. उप स्त्रुयैव यातय 10, 127, 7. — 2) n. SIDDH. K. 249, a, 5 (nach dem gaṇa अर्थवादि zu P. 2, 4, 31: m. n.; in der v. l. fehlt aber das Wort). a) Verschuldung; Verpflichtung, Verbindlichkeit; Schuld, debitum P. 8, 2, 60. VOP. 26, 101. AK. 2, 9, 3. TRIK. 2, 9, 1. H. 881. an. 2, 134. स्त्रुयान्श्रयमाना स्त्रुयानि RV. 2, 27, 4. 9, 47, 2. परं स्त्रुया सांवीर्य मकृतानि 2, 28, 9. 24, 13. मा धातुरग्रे अन्तोर्स्त्रुयैः 4, 3, 13. 23, 7. AV. 6, 118, 1. 119, 1. 2. स्त्रुयो कैव ते न्यविशत Nir. 3, 28. न नूनं वृक्षणामृणो प्रा-प्रूनामस्ति सुव्यताम्। न तेनो अग्रता पये RV. 8, 32, 16. यथा क्लो यथा शर्कं यथा स्त्रुयो संनयानसि 47, 17. AV. 19, 43, 1. स्त्रुयु कैव तास्तेन मन्यते यदस्मै ते कामं सनययिषुः sie halten es für ihre Verbindlichkeit, ihm den Wunsch zu erfüllen CAT. Br. 1, 1, 2, 19. 7, 2, 1. fgg. 3, 6, 2, 16. AIT. Br. 7, 13. स्त्रुयानि त्रीणायामकृत्य M. 6, 35 (vgl. 11, 63). R. 2, 106, 26. Zum Ver-ständniß diene folgende Stelle aus dem VISHNUDHARMOTTARA im ÇKDR.: देवानां च पितॄणां च ऋषीणां च तथा नरः। स्त्रुयवान् जायते यस्मात्तन्मोले प्रयतेत्सदा ॥ देवानामनृणो वृत्तयुर्जैर्भवति मानवः। अल्पविश्रय पूजाभिरु-पवासव्रतैस्तथा ॥ अद्भिन प्रजया चैव पितृणामनृणो भवेत्। ऋषीणां व्रत-चर्यणा अनेन तपसा तथा ॥ Vgl. TS. 6, 3, 10, 5 (u. स्त्रुयान्). M. 4, 257 und